Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Humanity - ISSN : 2279-0233
Continuous Issue-27 | October – December 2016

'विक्रमोर्वशीयम्' के मंगल श्लोक में वेदान्ती - कालिदास'

महाकवि कुलगुरु कालिदास को वंदन करते हुए मल्लिाथ कहते हैं -
कालिदासो गिरां सारं कालिदासः सरस्वती ।
चतुर्मुखोऽथवा साक्षात् विदुर्नान्ये तु मादृशाः ।।

अर्थात् कालिदास वाणि के सार रूप हैं, वे स्वयं सरस्वती के अवतार थें । उनको तो चतुर्मुख ब्रह्मा ही जान सकते हैं । मेरे (मल्लिनाथ) जैसा उन्हें नहीं जान सकता है । मल्लिनाथ की इस बात से हमे ज्ञात होता है कि हम कालिदास को पूर्णरूपसे नहीं जान सके हैं । महाकवि कालिदास को दर्शनशास्त्रों, वेद-वेदांगो, पुराणों, ज्योतिषशास्त्र, संगीत-कला, धर्मशास्त्रों, स्मृतिग्रंथों, रामायण, महाभारत इन सभी का गहन ज्ञान था । यह उनकी कृतियों के अभ्यास से हमें मालुम पड़ता है । फिर भी आज विश्व में कालिदास केवल एक शृंगारी कवि के रुप में अधिक प्रसिद्ध हैं । स्थिरदेव, दिड़नाग और निचुल ने भी ' कालिदासश्च स्वयं शृंगारी ' कहकर उनकों शृंगारी कवि के रूप में गौरव दिया है । तब यह प्रश्न खड़ा होता है कि क्या कालिदास सिर्फ शृंगारी विषयों का हि चरित्र-चित्रण करने वाले कवि थे ? कालिदास, तत्त्वज्ञान की जन्मभूमि भारत में अवतरित हुये थे । इस देश का अनपढ़ किसान भी तत्त्वज्ञान की भाषा बोलता है । फिर कालिदास तो तत्त्वज्ञानी और दार्शनिक भी थे । उनकी रचनाओं में भारो-भार तत्त्वज्ञान और दार्शनिक विचार पाये जाते हैं । तो फिर महाकवि कालिदास को दार्शनिक रूप में क्यों न देखा जाय ? उनके तीनों नाटकों के नान्दी(1) श्लोकों में सर्वदर्शन शिरोमणि रुप 'वेदान्त दर्शन ' के सिद्धान्तों का निरूपण हुआ है । इस बात को यहाँ श्रुति प्रमाणों के आधार पर सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है ।

पाश्चात्य संस्कृति में तत्त्वज्ञानी यातो दार्शनिक व्यक्ति की कल्पना विचित्र है । पाश्चात्य तत्त्वज्ञों के जीवन में एक प्रकार की शुष्कता, निरसता दिखाई पड़ती है । जो हमारे भारत के तत्त्वज्ञों में नहीं है । इसलिए पाश्चात्य तत्त्वज्ञानीयों को, गोपीयों के साथ खेलने वाला, दहीं-मक्खन की चोरी करने वाला श्री कृष्ण Philosophar नहीं लगता है । उनको इशुख्रिस्त, बुद्ध, महावीर तत्त्वज्ञानी लगते हैं । उन लोगों को प्रश्न होता है, कि तत्त्वज्ञानी रासक्रीड़ा(2) कैसे कर सकता है ? मुत्सद्दी, राजनीति निपुण श्री कृष्ण तत्त्वज्ञानी कैसे हो सकता है ? उनकी मान्यता के अनुसार तत्त्वज्ञानी सांसारिक सुखों का त्याग करने वाला, जगत् को नीरस माननेवाला, मानो सारे विश्व का बोज अपने शिर पर उठाया हो ऐसी मुखमुद्रावाला होना चाहिए । जब की हमारे देश में अवतरित हुए ऋषियोंने सांसारिक सुखों का त्याग कभी नहीं किया है । प्रत्येक ऋषि शादी सुधा था । एक भी ऋषि ऐसा नहीं है जिसे ऋषिपत्नी न हो । उनहों ने अपने मन,बुद्धि के उपर विजय प्राप्त कर लिया था इसलिए वह- जलकमलवत् रह सकते थे । श्रीमद् भगवद् गीता ने स्थितप्रज्ञावस्था बताते हुए कहा है कि- 'कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ।' (श्रीमद् भगवद् गीता-२-७०) कोइ भी कामना स्थितप्रज्ञ पुरुष को विचलित नहीं कर सकती है । हमारे महाकवि कालिदास भी इसि परंपरा में हैं । इसलिए उनका एक रूप ' वेदान्ती 'का भी है । जो उनके नाटकों के

मंगल श्लोकों में विशेष रूप से हमें दिखाई पड़ता है । यहाँ पर ' विक्रमोर्वशीयम्' के मंगल श्लोक में निरूपित वेदान्त विचार को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है ।

विक्रमोर्वशीयम् का मंगलश्लोकः-

वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरूषं व्याप्य स्थितं रोदसी
यस्मिन्नीश्वर इत्यनन्यविषयः शब्दो यथार्थाक्षरः ।
अन्तर्यश्च मुमुक्षुभिर्नियमित प्राणादिभिर्मृग्यते
स स्थाणुः स्थिरभक्तियोग सुलभो निःश्रेयसायास्तु वः ।।

अनुवादः- जिन को उपनिषदों में आकाश और पृथ्वी को व्याप्त हो कर (उनकी बहार) रहनेवाला परम पुरुष कहा है, जिन के विषय में दूसरे को न लागु पड़ने वाला 'ईश्वर'यह शब्द अक्षरशः सच्चा है । प्राण इत्यादि का नियमन करनेवाले मुमुक्षुओं जिन को अपने अंतर में खोजते हैं । वह, स्थिर भक्ति योग से सुलभ शिव तुम्हारे परम कल्याण के लिए हो ।

प्रस्तुत मंगल श्लोक में महाकवि कालिदास उपनिषदोंमें निरूपित 'ब्रह्मतत्त्व'का प्रतिपादन करते हैं । 'ब्रह्मतत्त्व' को हि यहाँ शिव, रुद्र, ईश इत्यादि नाम दिया गया है । मंगल श्लोक में स्थित शब्दों को इस तरह समझ ने का प्रयत्न करते है ।

वेदान्तेषु :- यानि उपनिषदों में, वेद साहित्य में - संहिता, ब्राह्मणग्रंथों, आरण्यकों और उपनिषदों -इस तरह अन्त में आने की वजह से उपनिषदों ' वेदान्त ' के रूप में पहचाने जाते हैं । वेद + अन्त = वेदान्त । 'अन्त' शब्द को दो तरिकों से उपनिषद् के अर्थ में सार्थक किया गया है ।(3) (१) छोर - अंतिम हिस्सा और (२) सिद्धान्त, सार या निष्कर्ष । वेद का निष्कर्ष - नीचोड़ उपनिषदों में होने कि वजह से उनको 'वेदान्त' कहते हैं । उपनिषदों में 'वेदान्त' शब्द का प्रयोग रहस्यात्मक ज्ञान के अर्थ में हुआ है । (4)

एकपुरुषम् :- परम् पुरुष - उपनिषदों में वर्णित 'ब्रह्मतत्त्व'को हि यहाँ 'एकपुरुषम्' कहा गया है । ऋग्वेद के प्रसिद्ध पुरुषसूक्त की प्रथम ऋचा में इस 'ब्रह्मतत्त्व'को हजारो मस्तकों, आँखों, पैरों वाला और ब्रह्मांड को व्याप कर के दश अंगुली शेष रहनेवाला पुरुष कहा गया है ।(5) 'श्रीमद् भगवद् गीता' के ग्यारहवें अध्याय में श्री कृष्ण परमात्मा ने अर्जुन को अपना विश्वरुप दिखायां है । उस विश्वरुप की स्तुति करते हुए अर्जुन ने कहा है- 'त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः ..... त्वया ततं विश्वमनन्तरूप । ।(श्रीमद्भगवद्गीता- ११-३८)

अर्थात्- आप आदि देव,पुराण पुरुष है, आप से ही यह अनन्त विश्व का विस्तार हुआ है । तो मुण्डकोपनिषद् में कहा गया है कि वह दिव्य पुरुष अमूर्त है, सभी के अंदर तथा बहार होने के बावजूद अजन्मा, उत्पत्ति रहित है । (6)

रोदसी :- 'रोदसी' यह शब्द, रोदस् नपु. द्वितीया विभक्ति द्विवचन का रुप है । जिसका अर्थ - ' द्यावापृथिव्यौ '- द्युलोक और पृथ्वीलोक होता है ।

ईश्वर :- ईशितुं शीलमस्येति ईश्वरः - शासन करने का जिसका स्वभाव है वह । 'श्रीमद् भगवद् गीता' में 'ब्रह्मतत्त्व' को ईश्वर कहते हुए कहा है कि हे अर्जुन ! सर्व प्राणियों के हृदय में 'ईश्वर'का वास है ।(7)

कालिदास कहते हैं कि यह 'ईश्वर'शब्द अनन्यविषयः - न विद्यते अन्यः विषयो यस्य सः । (बहुव्रीहि समास) शिव के अतिरिक्त दुसरे अन्य किसि भी देवता को लागु नही किया जा सकता है । 'वेदान्त' दर्शन के अनुसार 'ब्रह्मतत्त्व'- 'विशुद्धसत्त्वप्रधान' माया के आश्रयवाला बनता है, तब वह 'ईश्वर' कहलाता है । और जब 'मलीनसत्त्वप्रधान अविद्या के आश्रयवाला बनता है, तब वह 'जीवात्मा'बनता है ।(8) अद्वैतवेदान्त के मतानुसार ईश्वर, मायाशबलब्रह्म है, कारणब्रह्म है । (9)

नियमित प्राणादिभिः - ' आत्मनः एष प्राणो जायते । (तैत्तिरीयोपनिषद्- ३-१) जिन्होने प्राणादि- यानि की प्राण, इन्द्रियाँ, चित्तवृत्ति और काम-क्रोधादि विकारों का नियमन किया हैं । उनको ब्रह्मतत्त्व की प्राप्ति होती है । ' प्राणो ब्रह्मेति व्यजानात् ।(प्रश्नोपनिषद्- प्रश्न-३ मंत्र- ऐसा उपनिषद् वाक्य है । पातंजल योग में प्राण वायु का बहुत ही महत्त्व है । चित्त को एकाग्र करने के लिए और समाधिस्थ होने के लिए वह उपयोगी है ।

मुमुक्षुभिः - मोक्षार्थि अपने अंतःकरण में प्राणादि से ब्रह्मतत्त्व की खोज करते है । मुमुक्षु (मुच् - ६ गण,परस्मैपद- छूटने की इच्छा) हि वेदान्त का अधिकारी बन सकता है ।

स्थाणुः - तिष्ठतीति स्थाणुः - शाश्वत, अन्तरहित ब्रह्मतत्त्व ।

ततः प्रभुति विश्वात्मा न प्रसूते शुभाः प्रजाः ।

स्थाणुवन्निश्चलो यस्मात् स्थितः स्थाणुरतः स्मृतः । ।

स्थिर भक्तियोग सुलभः - इस ब्रह्मतत्त्व को प्राप्त करने का उपाय स्थिर भक्ति और योग है । श्रीमद्भगवद्गीता कहती है कि - 'मयिचानन्य योगेन भक्तिरव्यभिचारिणी ।' (श्रीमद्भगवद्गीता-१३-१०) निश्चल भक्ति से ही ब्रह्मतत्त्व की प्राप्ति हो सकती है । साधकों को दृष्टान्त के द्वारा समझाती हुइ 'श्रीमद्भगवद्गीता' कहती है कि-

यथा दीपो निवातस्थो नेऽगते सोपमा स्मृता ।

योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः ।। (श्रीमद्भगवद्गीता -६-१९)

निःश्रेयसाय - आत्यंतिक कल्याण के लिए - निश्चितं श्रेयः इति निःश्रेयसम् । मोक्ष की प्राप्ति ईश तत्त्व के साक्षात्कार से ही हो सकती है । ऐसा कालिदास का द्रढ विश्वास है । इस तरह यहाँ ब्रह्मतत्त्व रूप 'शिव'का एक पुरुषत्व, ईश्वरत्व और व्यापकत्व के रूप में शास्त्र संमत निरूपण हुआ है । इस तरह महाकवि कालिदास का ' वेदान्ती स्वरूप' हमे यहाँ स्पष्ट रूप में देखने को मिलता है । जो उनको केवल शृंगारी कवि के अपयश से मुक्त करता है ।

पादटीप

(१) आशीर्नमस्क्रियारूपः श्लोकः काव्यार्थ सूचकः । नान्दीति कथ्यते ।

(२) श्रीमद् भागवद् पुराण में रासक्रीड़ा का दार्शनिक और आध्यात्मिक अर्थ है । इस में जीवात्मा की विकसित और उन्नत स्थिति का निरूपण हुआ है । समजने की बात यह है कि रासक्रीड़ा में अशरीरी (Occult Love)प्रेम का वर्णन हुआ है ।

(३) 'ब्रह्मसूत्र चतुःसूत्री' (शांकरभाष्य- सहित) डॉ. लक्ष्मेश वी. જોષી, પાર્શ્વ પબ્લિકેશન, અમદાવાદ.દ્વિતીય આવૃત્તિ-૧૯૯૭, પૃ.-૦૬.

(४) वेदान्ते परमम् गुह्यम् (श्वेताश्वतरोपनिषद्- ६-२२)

(५) सहस्रशीर्षा पुरुषः..... वृत्वात्यतिष्ठद्दशऽगुलम् (ऋग्वेद-१०-९०-१)

(६) दिव्यो ह्यमूर्तः पुरुष सबाह्याभ्यन्तरेा ह्यजः । (मुण्क. उ. - २-२)

(७) ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति । (श्रीमद्भगवद्गीता- १८-६१)

(८) 'वेदान्तसार'- सदानंद - प्रकाशक- सरस्वती पु.भंडार ,अमदावाद.

(९) 'गौडपाद एक समीक्षात्मक अध्ययन' - डॉ. अरविंद ह.जोषी, द.गु.प्रा.पु, प्रकाशन स.मंडली-सूरत, 1984 पृ.- 129.

संदर्भ ग्रंथ सूचि

I. 'ऋग्वेदः' (दशमं मण्डलम्) - सम्पादको- वसन्तकुमार म.भट्ट, प्रा. के.वी. महेता- प्रकाशक- सरस्वती पुस्तक भंडार, अमदावाद.प्रथम आवृत्ति,१९९२.
II. 'ऐतरेयोपनिषद्'- सानुवाद शाऽकरभाष्यसहित- प्रकाशक- गोविन्दभवन कार्यालय,गीताप्रेस,गोरखपुर. सं. २०५५ सोलहवाँ संस्करण.
III. 'गौडपाद एक समीक्षात्मक अध्ययन' - डॉ. अरविंद ह.जोषी, द.गु.प्रा.पु, प्रकाशन स.मंडली-सूरत, 1984
IV. 'तैत्तिरीयोपिषद्'- सानुवाद शाऽकरभाष्यसहित- प्रकाशक- गोविन्दभवन कार्यालय,गीताप्रेस,गोरखपुर. सं. २०५५ अठारहवाँ संस्करण.(५) 'ब्रह्मसूत्र चतुःसूत्री ' (शांकरभाष्य- सहित) डॉ. लक्ष्मेश वी. જોષી, પાર્શ્વ પબ્લિકેશન, અમદાવાદ.દ્વિતીય આવૃત્તિ-૧૯૯૭.
V. 'बृहदारण्यकोपनिषद्- सानुवाद शाऽकरभाष्यसहित- प्रकाशक- गोविन्दभवन कार्यालय,गीताप्रेस,गोरखपुर. सं. २०५० छठा संस्करण.
VI. 'विक्रमोर्वशीयम्'- संपादको- प्रि.એચ.સી.દેસાઇ વગેરે- પ્રકાશક- સી.જમનાદાસી કંપની , અમદાવાદ.
VII. श्वेताश्वतरोपनिषद्- सानुवाद शाऽकरभाष्यसहित- प्रकाशक- गोविन्दभवन कार्यालय,गीताप्रेस,गोरखपुर. सं. २०५५ पन्द्रहवाँ संस्करण.
VIII. 'श्रीमद्भगवद्गीता'- गुजराती- टीकीसहित- प्रकाशक- गोविन्दभवन कार्यालय,गीताप्रेस,गोरखपुर. सं. २०५० पाँचवाँ संस्करण.

****

प्रा.मयाराम के. पटेल
(संस्कृत विभाग)
सरकारी विनयन कॉलेज,
सेक्टर-१५,गांधीनगर.

Copyright © 2012 - 2017 KCG. All Rights Reserved. | Powered By: Knowledge Consortium of Gujarat